नढ़िया झुकैए हमर घराड़ीपर

(गजल संग्रह)

जगदानन्द झा 'मनु'

समर्पण

ई गजल संग्रह “नढ़िया भुकैए हमर घराड़ीपर” सादर समर्पित अछि हुनक सबहक श्रीचरण कमलमे जे अपन माटि पानिसँ दूर होएबाक बिछोह अपन करेजामे समटने छथि।

दू आखर

आदरणीय रसिकजन सादर प्रणाम। अपनेक हाथमे हमर कोनो तरहक ई पहिल पोथी अछि। हमरा हेतु ई हार्दिक हर्खक गप्प अछि। नीक बेजाए केहेन से तँ आब अपने लोकनि कहब। जेनाकी अपने सभ जनैत छी गजल मने प्रेम, प्रेम मने जीवन, आ एहिठाम हमर प्रेम अर्थात हमर जीवन मिथिलाक माटि पानिसँ अछि। एहि संग्रहमे हम मिथिलाक माटि पानिसँ सरोकार रखैत विषयबस्तु परसने छी। समाजक स्थिति देखाबैक प्रयास केने छी। कोनो रचनासँ जँ किनको मोनकेँ ठेस पहुँचनि तँ हम क्षमाप्राथी छी अन्यथा नहि लेब, ई मात्र संजोग अछि।

हम गजलक ओस्ताज नहि, मात्र एकटा विद्यार्धि छी। गजल व्याकरणक वा गजल नियमाबलीक पूर्ण एवं शुद्ध ज्ञान सिखैक इच्छुक, विद्यार्धि, शोधकर्ता आ रासिकजनसँ आग्रह जे ओ सभ अनचिन्हार आखर (http://anchinharakharkolkata.blogspot.com) ब्लॉगक अध्य्यन आ मनन करथि। हम अपन अपूर्ण गजलक ज्ञान संगे अपनेक समक्ष उपस्थित छी तँए एहि संग्रहमे बहुत रास वार्णिक आ व्याकरण सम्बन्धित दोख भऽ सकैए। आशा अछि अपने सभ कोनो तरहक गलती लेल अज्ञानी जानि क्षमा करैत हमरा सूचित करब जाहिसँ हम अपन अज्ञानताकेँ दूर कए आगूसँ अपनेक सेवामे आओर शुद्ध आ नीक गजल प्रस्तुत करब।

हमर साहित्यक बएस कोनो बेसी नहि भेलए। विद्यार्थी जीवनमे कविता लेखनमे रूचि छल मुदा गृहस्थ जीवनमे सभटा बिसरा गेलहुँ। अक्टूबर २०११, श्री गजेन्द्र ठाकुरजी विदेह ग्रुपसँ जोड़लनि, आ ओतएसँ हमर साहित्यक जीवन शुरू भेल। विदेहपर सभकेँ नीक-नीक लिखैत देख कए हमरो भितरक मरल साहित्यक सिनेह बाहर निकलल, दू-तीनटा कविता लिख विदेहक देबाल पर देलियै। पाठकक वाह-वाही पढ़ि नीक लागल। आगू लिखैक प्रेरणा भेटल। संगे अपन कविताकेँ विदेह ई-पत्रपर छपल देख आओर खुशी भेटल। मुदा हमर मैथिली भाषाक पक्ष बड्ड कमजोर छल, एखनो अछिए। नवम्बर २०११ मे गुरुबर आशीष अनचिन्हारजी विदेह ग्रुपकेँ आशिर्वादे भेट भेलाह आ ओहिठामसँ हुनक मार्गदर्शनमे शुरू भेल हमर गजल आ मैथिली लिखैक यात्रा। ओकर बादक सभ किछु अपने लोकनिकेँ समक्ष अछि। हमर जीवनमे साहित्यक कोनो जगह अछि तँ ओहि लेल हम आभारी छी मार्गदर्शक श्री गजेन्द्र ठाकुर जीकेँ, गुरुबर श्री आशीष जीकेँ, विदेह ग्रुपक मित्रमंडलीक आ समस्त पाठक लोकनिक जिनक मार्गदर्शन आ प्रेरणाक बलसँ अर्जित पूजीकेँ हम एहिठाम परसने छी।

अपने सिनेहक आशमे

जगदानन्द झा 'मनु'

ग्राम पोस्ट- हरिपुर डीहटोल, मधुबनी

ई-मेल – jnjmanu@gmail.com

क्रम

०१ सँ ३४ गजल, सरल वार्णिक बहर

३५ सँ ४४ गजल, समान वर्णवृत

४५ सँ ४७ गजल, बहरे मुतकारिव

४८ सँ ५३ गजल, बहरे रमल

५४ सँ ५६ गजल, बहरे रजज

५७ ओ ५८ गजल, बहरे हजज

५९ ओ ६० गजल, बहरे मुशाकिल

६१ ओ ६२ गजल, बहरे असम

६३ सँ ६५ गजल, बहरे खफीक

६६ ओ ६७ गजल, बहरे सलीम

६८ ओ ६९ गजल, बहरे जदीद

७० सँ ७३ गजल, बहरे कलीब

७४ गजल, बहरे कबीर

७५ गजल, बहरे हमीद

७६ गजल, बहरे मुजस्सम वा मुजास

७७ ओ ७८ हजल

७९ सँ ९० बाल गजल

९१ सँ १०१ भक्ति गजल

1

ससिनेह संग्रह अहाँक हाथमे पसरल जे

अहाँक लेल परसलहुँ मोनमे निखरल जे

सिनेह हमर सभटा मिथिलाक माटि पानिसँ

करेजासँ निकलि कऽ कागजपर उतरल जे

नै ज्ञान बुद्धि नै साहित्य केर शिक्षा किछु पेलहुँ

ई सभ आशीष गुरुवरकेँ अछि चतरल जे

हमर अल्प ज्ञानसँ परिचय अहाँ कराएब

प्रिय पाठक अपने पढ़ि गलती पकड़ल जे

समेटत 'मनु' एक एक अनमोल सिनेहकेँ

हमर प्रति करेजासँ अपनेक झहरल जे

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१८)

****

2

भाइ आब हमहूँ लिखब अपन फूटल कपारपर

जेना ई भात-दालि तीमन ओकर उपर अचारपर

सोन सनक घर-आँगन स्वर्ग सन हमर परिवार

छोड़ि एलहुँ देश अपन दू-चारि टकाक बेपारपर

कनिको आटा नहि एगो जाँता नहि करछु कराही नहि

नून-मिरचाइ आनि लेलहुँ सभटा पैंच-उधारपर

चिन्हलक नै केओ नै जानलक टूअर बनि रहलहुँ

गेलहुँ ई अपन माटि-पानि छोड़ि दोसरक द्वारपर

हम कमेलौं घर ओ भरलक हमर खोपड़ी खालिए

आब बैसल 'मनु' कनैए   बरखामे चुबैत चारपर

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-२१)

****

3

नढ़िया भुकैए हमर घराड़ीपर

कुकूर सुतैए हमर दुआरीपर

गामक पनिगर भात छोड़ि कऽ एलौं

छी पेट पोसने मासक उधारीपर

जे किछु कमेलौं हाथ-पएर तोड़ि कऽ

साँझे राति खर्च भेल छुच्छे ताड़ीपर

बचेलौं बर्ख भरि पेट काटि-काटि कऽ

गमेलौं गाम जे आबक सबारीपर

छोरु आनक आशा अप्पन बसाऊ यौ

घुरि आउ 'मनु' सोनसन बाड़ीपर

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१४)

****

4

किस्त-किस्तमे जिनगी बिताबै लेल मजबूर छी

माटि पानि छोड़ि अपन किएक एतेक दूर छी

आबै जाए जाउ घुरि-घुरि अप्पन-अप्पन घर

घरमे रोटी नै रखने माछ-भात भरपूर छी

तिमन-तरकारी बेच-बेच करु नै गुजारा यौ

घुरि आऊ अप्पन गाम एतुका अहाँ हजूर छी

परदेशमे कतेक दिन रहब बनि पड़बा

अप्पन घर आऊ एतएकँ अहाँ तँ गरूर छी

अपन लोकक मन-मनमे 'मनु' अहाँ बसुयौ
परक द्वारिपर बनल किएक मजदूर छी

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१८)

****

5

सोना भसल जाइए जुनि काँटीकँ पकरू
छोड़ि अपन भाषा नहि खराँटीकँ पकरू

दोसर घर धेने भेटत नहि ओ सिनेह
छोरि आनक बोझ अपन आँटीकँ पकरू

आदी कालसँ अपन शिक्षा लेने विश्व अछि
दोसरकँ देखाँसुमे   नहि काँटीकँ पकरू

संपन्न हमर संस्कृति मधूर भाषा अछि
लात मारि टल्हाकँ अपन खाँटीकँ पकरू

छोरि दिल्ली मुंबई घुरि आऊ अप्पन घर

आब दरभंगा मधुबनी राँटीकैं पकरू

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१६)

****

6

बाबा पोखरिकैं रौहक की कही

बहुत कचोटैए गामक दही

अशोक ठाढ़िसँ कूदि पोखरिमे

जाइठ छुबि कोना पानिमे बही

बनसी बनाबी कोना नूका कए

पूल्ली बनाबै लेल काटी खरही

छीन कऽ नानी हाथक मटकूरी

छोट-छोट हाथसँ छाल्ही मही

जखन अबैत गामक इआद

कनि-कनि कऽ हम नोरेमे बही

सभ सुख रहितो परदेशमे

माटिक बिछोह कते हम सही

मैरतो 'मनु' सभ सुख छोरि कऽ

मिथिलाक माटिपर हम रही

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१२)

****

7

नहि हम कागजक आखर जनि पएलहुँ

नहि केकरो करेजमे हम सनि पएलहुँ

आब के पतियाएत हमर मोनकैं कनिको

हम तँ नहि केकरो अपन बनि पएलहुँ

बिन पानिक गति जेना माछक होएत छैक

ओहे गति हमर हम नहि कनि पएलहुँ

अप्पन घर छोड़ि कऽ परदेश जा बसलहुँ

सुन्नर यादि छोड़ि नहि किछु अनि पएलहुँ

बरख-बरख हम रहलहुँ परदेशमे

ओकरा तँ 'मनु' अपन नहि मनि पएलहुँ

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१७)

****

8

जाति पातिपर आब हम नहि लड़ब यौ

हम मैथिलपुत्र मिल कऽ आगू बढ़ब यौ

अपन माटि पानिपर आब जीयब हम

प्राण अप्पन छोरब वचन नै तोरब यौ

बाहर बहुत छैक दूध मलाइ राखल

मड़ुआ रोटी नून लेल सभटा छोरब यौ

खून पसीनासँ अप्पन धरती पटाएब

मेहनतसँ सोना उपजा कए रहब यौ

बिसरल मान सम्मान फेरसँ जगाएब

दुनिआक नक्शामे 'मनु' फेरसँ उठब यौ

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१६)

****

9

बूझलक नेता ई जनता पाकल अछि

आम जनता तँ सदिखन भागल अछि

बचल छै गाममे बूढ़ पुरान आ बच्चा

कबिलाहा सभ प्रदेशमे पागल अछि

खेत बनल छै परती घर सुनशान

सूतैत पिचपर सभ अभागल अछि

पिया विरहमे वौराएल नब कनियाँ

कनि कनि सगरो देह सुखायल अछि

जागू जनता जनार्दन आबो हक जानू

भगाबू ओकरा जे नेता बिकायल अछि

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१५)

****

10

हमर कमाइ कोन कोनामे परल अछि

मंत्री घरमे बैमानीक सोना गरल अछि

गरीब बनि गेल आइ जब्बहकैं बकरी

चिकबा धनिकाहा गामे गाम फरल अछि

डाका परै परोसमे जँ सुतलौं निचैनसँ

ई निश्चय बुझू आत्मा हमर मरल अछि

ढोंगी भक्तकैं नहि निकलै रुपैया दानमे

भरि थारी लेने खंड माछक तरल अछि

शहर नहि 'मनु' गाम गामकैं चौकपर

मनुक्खसँ सजि शराबखाना भरल अछि

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१६)

****

11

(मिथिला राज अभियानमे सर्मपित शहीद सभकैं श्रधा सुमन -)

खूनसँ भिजलै धरती मिथला बनबे करतै

आब जोड़ लगाबए कियो झंडा गरबे करतै

सुनू बलिदानी सुनू शैनानी आब दिन दूर नै

विश्वक नक्शामे मिथिला राज चमकबे करतै

कतबो चलतै बम निकलै चाहे हमर दम
क्रांति बढ़ल आगू आब जुनि ई रुकबे करतै

बहुत सहलहुँ सभ सहबै नै आब ककरो
सोनितक हिलकोरसँ दुश्मन मरबे करतै

एक खूनक बूंदसँ सए बलिदानी जन्म लेतै
अपन अधिकार लेबै लेल ओ लड़बे करतै

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१८)

****

12

हम चान लेबैलए बढ़लौं अहाँ रोकब तैयो तारा लेबै
मैथिलकँ बढ़ल डेग नहि रुकत आब जयकारा लेबै

मिथिलाराज मँगै छी हम भीखमे नहि अधिकार बूझि
चम्पारणसँ दुमका नहि देब किशनगंज तँ आरा लेबै

छोरलौं दिल्ली मुंबई अमृतसर सूरतकँ बिसरै छी

अपन धरतीपर आबि नहि केकरो सहारा लेबै

गौरब हम जगाएब फेरसँ प्राचीन मिथिलाक शानकेँ

विश्व मंचपर एकबेर फेर पूर्ण मिथिलाक नारा लेबै

उठू 'मनु' जयकार करू अपन भीतर सिंघनाद करू

फेरसँ निश्चय कए सह सह अवतार बिषहारा लेबै

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-२२)

****

13

केहन-केहन दुनियाँ   केहन-केहन रंग एकर

कियो हँसैए कियो कनैए कियो झूमैए संग एकर

कियो मरैए दूधक द्वारे कियो भाँगमे डूबल अछि

बुझि नहि पएलहुँ आइतक कनिको ढंग एकर

पथैत चिपड़ी लक्ष्मी देखलौं कुबेड़ चराबथि पाड़ी

गंगा-यमुना पानि भरैत की हमहूँ छी अंग एकर

भोट मांगे पोहला पोहला कऽ गदह्येकेँ बाप बना कऽ

जितैत देखु गिरगीट जकाँ बदलैत रंग एकर

'मनु' छल कारिझाम चिन्हार बनोलन्हि अनचिन्हार

घड़ी-घड़ीमे बदलैत देखू आब तँ उमंग एकर

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-२०)

****

14

भ्रष्टाचारकेँ ठेका आजुक सरकार लेने

कारी रुपैयाक करमान धर्माचार लेने

बोगला भगत छै बैसल घाट-घाटपर

खून पिबैक लेल तैयार हथियार लेने

कर्तव्य बिसरल अछि मिडिया समाजमे

नीक बेजाए छोरि कमाऊ समाचार लेने

प्रेमक भाषा सिमैट गेल अछि पाइ तक

पाइ अछि एक दोसरसँ सरोकार लेने

सुनलौं कोयला दलालीमे मुँह कारी हैछै

'मनु' सगरो कारी छैक मिथ्या प्रचार लेने

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण - १६)

****

15

नीक नीक लोकक ई केहन काज अछि

बेटा बेचैत नै कनिको किए लाज अछि

मायाक महिमा सगरो पसरल अछि

जतए देखू आब रुपैयाक राज अछि

धर्म निकलैत अछि पाखण्डमे बोड़ि कऽ
नवका आइ केहन एकर शाज अछि

बैमानी शैतानी बिच्चेठाम पोसाइ छैक
शुद्धाक जीवनमे तँ खसल गाज अछि

अपन बड़ाइमे 'मनु' बुड़ाइ कहै छी
माथक बनल केहन नव ताज अछि

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण - 15)

****

16

आइ काल्हि तँ राजनीतिक बाजार बहुत गर्म अछि
देखू नेता सभक हाल बनल कतेक बेशर्म अछि

चानन टिका लगा कए बनल बड़का-बड़का भक्त

नहि पुछू एहि संसारमे केने कतेक कुकर्म अछि

अछि जे कर्मयोद्धा धीर बीर ओ कतए बजैत अछि

चुप्प भऽ करैत सदिखन अपन-अपन कर्म अछि

भैय्यारी आ सद्भावना ई तँ सबसँ बड़का प्रेम अछि

जे लडाबए एक दोसरसँ ओ नहि कोनो धर्म अछि

हम छी मैथिल आन नै 'मनु' कोनो हमर धर्म अछि

सपनोमे जँ तियागी ई सभसँ बड़का अधर्म अछि

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-२०)

****

17

घर-घर रावण आइ बसल अछि

सौभाग्यक सीता कतए भसल अछि

करेजक सिनेहकैँ मोल रहल नै

सभक पिआर पाइमे फसल अछि

कर्तव्य बोध बिसरा गेल सभतरि

भ्रष्टाचारमे सभ कियो धसल अछि

बैमान बैसल अछि राजगद्दीपर

इमानक मीटर कते खसल अछि

देश समाज 'मनु' नहि कुशल आब

जमाए बनल आतंकी असल अछि

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१४)

****

18

हाथीक दाँत देखाबैकैँ आर नुकाबैकैँ छै आर

नेताकैँ कहैक गप्प छै आर बनाबैकैँ छै आर

केलक भोज नै दालि बड्ड सुड़के ई बूझल

भोज करैक बात आरो छैक देखाबैकँ छै आर

दोसरकँ फटलमे टाँग सभ कियो अड़ाबै छै

फाटल अपन सार्बजनिक कराबैकँ छै आर

सासुरकँ मजा बहुते होइ छै सभकँ बुझल

कनियाँ सन्ग सासुरमे मजा सुनाबैकँ छै आर

भाइ धनक गौरब तँ गौरबे आन्हर रहै छै

मोट रुपैया जखन बाप जे पठाबैकँ छै आर

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१८)

****

19

हम बनि गेलहुँ आन्हर कन्हा राज करैत अछि

अज्ञानी बनि रहलहुँ भाग हमर जड़ैत अछि

के चलबैए गोली कएकर सीना छलनी होइए

कतहुँ देखू हाथ हमरे सभतरि लड़ैत अछि

बिनु अन्नकैं सभतरि जनता भूखे सुतैत अछि
गोदाममे भरल अन्न एखनो खूब सड़ैत अछि

सभक घरमे ई हड़ हड़   खट खट हैते छैक
बेटी साउस कहियो नै पुतौह् किए मरैत अछि

झूठ कहब झूठ सुनब सत्यसँ सभ भागि गेलै
सत्य कहक मोल 'मनु' गदहा बनि भरैत अछि

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१९)

****

20

घर घरमे चक्कू पिजाबैत देखलौं
नेनाकैं तमाकुल चूनाबैत देखलौं

बेगरता निकालि कऽ आजुक घड़ीमे
नीक नीककैं ठैंगा देखाबैत देखलौं

मोनक दोख मोनेमे नूका कऽ सभटा

कपटसँ करेज लगाबैत देखलौं

दियादक फसादमे अपने मोलमे
घरमे धिया पुता नुकाबैत देखलौं

पाइकँ जमाना छै पाइकँ हिसाबमे
पानिमे मनुक्खता डूबाबैत देखलौं

नै रहिगेल मोल प्रेम आ सिनेहक
प्रेमकँ डबरामे बहाबैत   देखलौं

'मनु' मन कोमल सहि नहि सकलौं
किए माएकँ नोर खसाबैत देखलौं

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१४)

****

21

कान नै अपन देखब कौआ खिहारब
कहू कहू कोना अहाँ मिथिला सुधारब

घोघ तर कनियाँ कोठी तरहक माछ

मोन होइतो कहू कियो कोना निघारब

लागल आगि जीवनक मिझाएब कोना

की जिनगी भरि खड़ेल खड़े पजारब

कहियो तँ बसब आ ककरो बसाएब

भटकैत सीथ कतेक आरो उजारब

पानि केखनो 'मनु' पियासलोकैँ पीएब

की बनि बकलेल माटिपर टघारब

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१५)

****

22

मनुक्खक एहि दुनियाँमे कोनो मोल नहि रहल

हमरा लेल केकरो लग दूटा बोल नहि रहल

बजाएब कतए ककरा सभटा साज टूटिगेल
छल एकटा फूटल ओहो आब ढोल नहि रहल

सभतरि घुमैत अछि   मनुक्खक भेषमे हुड़ार
नुकाबै लेल ओकरा लग कोनो खोल नहि रहल

रातिक भोजन ओरिआनमे माएक मोन अधीर
छल हमर बाड़ीमे एकटा से ओल नहि रहल

हँसैत आ मुस्काइत रहए जतएकँ सभलोक
मिथिलाक गाममे 'मनु' आब ओ टोल नहि रहल

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण - १९)

****

सभकियो दुनियाँमे किएक आँखि चोराबै छैक
माँगि नहि लिए कियो तँ सभकिछु नुकाबै छैक

गरीबी भेलैक बहुते केहन ई व्यबस्था छैक
गरीबी नहि सरकार गरीबेकैं मेटाबै छैक

साउस भेली सरदार गलती नहि हुनकर
जतए ततए किएक पुतोहुकैं जड़ाबै छैक

जतेक दर्द बेटामे बेटीयोमे ओतबे सभकैं
बेटा बिकाइ किएक बेटीकैं सभ हटाबै छैक

दुनियाँक रीत एहन 'मनु'कैं नै सोहाइ छैक
खोपड़ीमे रहए जे सभक घर बनाबै छैक

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१८)

****

24

अनकोसँ सम्बन्ध जोड़ाबै छै पाइ

छोटकाकेँ बड़का बनाबै छै पाइ

फूसियो बिकाइ छै मोलेमे आइ तँ

सतकेँ सभतरि नुकाबै छै पाइ

ज्ञानक कनिको मोल नहि रहल

प्रवचन सभटा सुनाबै छै पाइ

नहि माए बाबू नहि भाइ बहिन

दुनियाँमे सभकेँ कनाबै छै पाइ

चिन्हार नै अनचिन्हार एहिठाम

'मनु' आइ सभकेँ हँसाबै छै पाइ

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१३)

****

25

मारी माछ नहि ऊपछी खत्ता

भरि समाज घोड़नकैँ छत्ता

परचट्ट बनल जनता छी

खाइ छी गरदनिपर कत्ता

कांकोड़ बिएल कोंकड़े खए

भय गेल देशक लत्ता लत्ता

सगरो नाँघल जाइत अछि

छन छन मरीयादाकैँ हत्ता

रहब भरोसे कतेक 'मनु'

भेटे एक दिन हमरो भत्ता

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-११)

****

26

सुरशाक मुँह बेएने महगाइ मारलक

बरख-बरखपर पाबि बधाइ मारलक

छलहुँ भने बड़ नीक बिन बन्हले कतेक

गोर-नार कनियाँ संगक सगाइ मारलक

झूठक रंगमे डूबि जीबितहुँ कतेक दिन

रंग हटैत देरी झूठक बड़ाइ मारलक

सुधि बिसरि कए सभटा निसामे बहेलहुँ

दिन राति पीया कए गाम गमाइ मारलक

भौतिक सुखमे डूबल 'मनु' सगरो दुनियाँ

जतए ततए फरजीकेँ उघाइ मारलक

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१७)

****

27

सभकेँ हम करि सम्मान सभ बुझैत अछि गदहा

सभकेँ गप्प हम सुनै छी सभ कहैत अछि गदहा

सभतरि मचल हाहाकार मनुक्ख खाए गेल चाड़ा

भ्रष्टाचारमे डूबि आइ देश चलबैत अछि गदहा

नवयुवक फँसल भमरमे साधु करए कबड्डी

देखू गाँधी टोपी पहिर किछु कहबैत अछि गदहा

भगवा चोला पहिर-पहिर आँखिमे झौँकै मिरचाई

धर्माचार बनल बैसल धर्म बेचैत अछि गदहा

जंगल बनल समाजमे सोनितसँ भिजल धरती

शेर सगरो पड़ा गेलै चैनसँ सूतैत अछि गदहा

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-२०)

****

28

गीत आ गजलमे अहाँ ओझराति किएक छी

हुए मैथिलीक विकास अंसोहाति किएक छी

परती पराँत जतए कोनो उपजा नै होइ

तीन फसल ओतएसँ फरमाति किएक छी

जतए सह सह बिच्छू आ साँप भरल होइ

ओतए बिना नोतने अहाँ देखाति किएक छी

अपन चटीएसँ नै   फुरसैत भेटे अहाँकेँ

सिलौटपर माथ फोरि कऽ औनाति किएक छी

आँखि पथने बरखसँ अहीँक रस्ता तकै छी

प्राणसँ बेसी 'मनु' मनकेँ सोहाति किएक छी

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण- १७)

****

29

किछु एहन काज करब हमहूँ

नै फोटोमे टाँगल रहब हमहूँ

एलहुँ जन्म लए कए दुनियाँमे

एक नै एक दिन मरब हमहूँ

कुक्कुर बिलाई जकाँ पेट पोसैट

आब जुनि ओहेन बनब हमहूँ

आगू बढ़ि नव समाज बनाएब

नै पाछू आब आगू चलब हमहूँ

खाख छनि 'मनु' बहुत बौएलहुँ

आब अपने घर बसब हमहूँ

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण -१३)

****

30

गजल नहि लिखतौं तँ हम करितौं की

गजल बिनु जिनगी अपन जीबितौं की

शराबमे निसा छैक   बुझलहुँ   हमहूँ

शराब नहि पीबितौं तँ हम पीबितौं की

सभ कहलक नहि दिमाग हमरामे

एहिसँ बेसी लए कए हम पबितौं की

दुनियाँमे सभतरि   भऽ जाइ सोने सोना

तँ कहू सोनाकँ कियो कनिको पूछितौं की

मन मारने 'मनु' बैसल छी नहि बुझू

एते हल्लामे बजितौं तँ अहाँ सुनितौं की

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण - १५)

****

31

हम ढोलक छी सदिखन बजिते रहलहुँ
नहि सुनलक कियो बात पीबिते रहलहुँ

हमर मोनक गप्प मोनेमे रहिगेल बंद
कहब कोना जीवन भरि सोचिते रहलहुँ

जकर छल आस ओ सभ छोरि चलि देलक
अनचिन्हारसँ   ससिनेह भेटिते रहलहुँ

चीरो कऽ करेजा देखाएब तँ पतियाएत के
अपन टूटल करेजकँ जोड़िते रहलहुँ

बुझाएब कोना मोनकँ शराबो भेल महग

आँखि निहारि 'मनु' आब तँ तकिते रहलहुँ

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१७)

****

32

ओ निसाँ शराबमे कतए चाही जे पीबैक लेल

बहाँना माहुरमे कतए चाही जे चीखैक लेल

सगरो बहल अछि धाड़ आब शराबक देखू

लाबू कतयसँ सूई-ताग ई धाड़ सीबैक लेल

बचल किए आब शराबे   टूटल करेज लेल

बहुतो छै जीवनमे एकर बादो जीबैक लेल

जँ डगमगएल डेग शराबे किएक थामलौं

बाँकी अछि एकर बादो बहुत सीखैक लेल

बहाँना बहुत अछि   दुनियाँमे एखनो जीवैकेँ

आबू 'मनु' देखू बहुत किछु अछि पीबैक लेल

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण- १८)

****

33

कहलन्हि ओ मंदीरमे नहि पीबू एतए शराब

कोनठाम ओ नहि छथि कहु पीबू ततए शराब

ई नहि अछि खराप बदनाम एकरा केने अछि

ओ की बुझत भेटलै नहि जेकरा कतए शराब

मरलाबादो हम नहि पियासल जाएब स्वर्गमे

जाएब जतए सदिखन भेटए ओतए शराब

मारा-मारि भऽ रहल अछि जाति पातिकेँ नामपर

मेल देखक हुए तँ देखू भेटए जतए शराब

सभ गोटेकैँ निमंत्रण ससिनेह 'मनु' दैत अछि

आबै जाए जाउ सभमिल पीब बहुतए शराब

(सरल वार्णिक वर्ण, वर्ण-१९)

****

34

बेटी नहि होइ दुनिआमे कहु बेटा लाएब कतएसँ

जँ दीपमे बाती नहि तँ कहु दीप जड़ाएब कतएसँ

आबै दियौ जगमे बेटीकैँ के कहे ओ प्रतिभा इन्द्रा होइ

भ्रूण-हत्या करब तँ   कल्पना सुनीता पाएब कतएसँ

मातृ-स्नेह, वात्सलकैँ ममता बेटी छोरि के दोसर देत

बिन बेटी वरकैँ कनियाँ घरमे सजाएब कतएसँ

धरती बिन उपजा कतए घर बिनु कतए घराड़ी

बिन बेटी सपनोमे   नव संसार बसाएब कतएसँ

हमर कनियाँ माए बाबी ओहो तँ किनको बेटीए छथि

बिनु बेटी एहि दुनिआमे 'मनु' कहू आएब कतएसँ

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-२१)

****

35

नहि हमरा सागक तोड़न चाही

नहि हमरा पातक छोड़न चाही

नव मिथिला निर्माणक बल लेने

शुभ मिथिला राजक जोड़न चाही

सूपक भाँटा सन डोलति लोकक

मोनक बदलति नै मोरन चाही

बिनु जानक भय केने छोरै नहि

घर घर बिषबिश्षी घोड़न चाहि

हक हमरा एखन अप्पन चाही
सभटा तीमन नहि फोड़न चाही

(वर्ण-१३, मात्रा- नअ नअटा दीर्घ सभ पाँतिमे)

****

36

टोना ओहे जे टोनै सभकेँ
तारी ओहे जे तारै सभकेँ

लेखक ओहे जे मानै मनकेँ
रचना सभ हुनकर छूबै सभकेँ

कनियाँ ओहे जे भाबै वरकेँ
सासुरमे अपना बूझै सभकेँ

नेता ओहे जे माने विधि नै

जूता मुक्का जे खालै सभकैँ

घरकैँ बेटा नै राखै मनदू

आश्रम आगू ओ जीतै सभकैँ

(मात्रा क्रम - नअ नअटा दीर्घ सभ पाँतिमे)

****

37

जकर मोनक रावण नै मरलै

राम आजुक कोना ओ बनलै

डशल साँपक पइनो मंगै छै

डशल मनुक्खक कनिको नै कनलै

गेल आँगन घर सभ पलटै छै

मोन भेटत कोना जे जड़लै

हाथ रखने सभतरि भस्मासुर

निकलितो साउध बाह्र डड़लै

छोड़ि ढेपापर चुगला 'मनु'कैं
शह्र दिस नेन्ना सभटा भगलै

(मात्रा क्रम : २१२२-२२-२२२, सभ पाँतिमे)

****

38

एमरीक पूजा जोड़ पकरने छै
गाम गाम मैयाकैं पसारने छै

एक दोसरामे होड़ छैक लागल
सभक बुद्धिकैं के आबि जकरने छै

पाठ माइकसँ छकरैत आँखि मुनिने
अपन मायके सभ नाम बिसरने छै

एक कोणमे छथि चूप मूर्त मैया

लोक नाच गाजा भाँग दकरने छै

'मनु' किछो जँ बाजल आँखि खोलि कनिको

लोक ओकरेपर गाल छकरने छै

(मात्रा क्रम : २१-२१-२२/२१-२१-२२)

****

39

हम हँसलौ तँ संसार ई हँसल

कानलपर हमर नै कियो कनल

सिदहामे बझल आइ लोक सभ

आनक नै सरोकार छै बचल

घुन खेने सगर घरक खामकेँ

ख'र बाती निकलि डोलिते चलल

खूनसँ ओरयानी सभक पटल

सुनतै आब के केकरो कहल

'मनु' मनभौक गुड़ चौर खा कए

किरदानी सभक देखते रहल

(मात्रा क्रम : २२२१-२२१-२१२)

****

40

आखर आखर जोड़ि जोड़ि कऽ जीवनक ग्रन्थ लिखने छी

कोड़ो वाती तोड़ि तोड़ि कऽ हम माघक जाड़ तपने छी

रखलौं जगमे पहिल डेग जखन सपना छोड़ि किछु नै छल

बड़ बड़ साँपक एतए धरि आबैमे जहर सहने छी

अप्पन जीवन केर जोड़ घटा सभटा एसगर केलौं

भूखे रहितो पेट हमर मुदा नै किनकोसँ मँगने छी

झोपड़ पट्टी केर भीत बनाबी दिन भरि अपन हाथसँ

दोसर दिन तोरैत लातसँ चण्डालक आँखि तकने छी

दू दूटा अठमासु दूध मुँहा भूखल हमर कोरामे

नै दुख सहि नेनाक देख मुँह प्रभुकेँ 'मनु' सुमरने छी

(मात्रा क्रम : २२२२-२१२११-२२२२-१२२२, सभ पांतिमे)

****

41

एहि ठाम साट हेराए गेलै रामा

फेर आइ बलम बौराए गेलै रामा

चढ़ल साइठक जबानी केहन बुढ़बापर

चूलहाक नार चोराए गेलै रामा

गाममे बसल घरे घर छै कंठी धारी

साँझ परल माँछ झोराए गेलै रामा

देख ढंग पुतक करनी आजुक आँगनमे
बाप केर आँखि नोराए गेलै रामा

'मनु' समाजमे सगर मोदी जीकेँ अबिते
माल संग चोर पकराए गेलै रामा

(मात्रा क्रम : २१२१२१-२२२२-२२२)

****

42

वेदरदी नै बुझलक हमरो जखन
जीबू कोना जीवन झहरल तखन

घर घर अछि रावण रामक भेषमे
कतए रहती आजुक सीता अखन

दुश्मन बनि गेलै भाइक भाइ अछि

टाकामे भसिएलै कतए लखन

सुखि गेलै ममता मायक कोइखक
भदबरिया पोखरि सन भेलै भखन

सगरो पसरल ‘मनु’ सहसह दू मुँहा
काइट नै लेए के कतए कखन

(मात्रा क्रम : २२२-२२२-२२१२)

****

43

मनक भीतर माटिक प्रेम काबा सन
लगैए ई दूर भय गर्म आबा सन

दियावाती भेल नै चौरचन भेलै
मनोरथ भसि गेल ताड़ीक डाबा सन

अपन अँगने छोरि एलहुँ सगर हित हम
फरल दुश्मन एतए बड्ड झाबा सन

करेजामे दर्द गामक बसल एना

बिलोका बनि ओ तँ चमकैत लाबा सन

पिया बैसल दूर परदेशमे 'मनु' छथि

विरहमे हम छी हुनक बनल बाबा सन

(मात्रा क्रम : १२२२-२१२२-१२२२)

****

44

दुनियाँसँ हिंसा मरि जेए

बस पाँच काठी परि जेए

जे झूठमे सदिखन डूबल

एहन तँ दुनियाँ गड़ि जेए

नै घुस बिना जतए शासन

ओ सगर आसन जरि जेए

सड़लै जँ एक्को पोखरिमे

सभ माछ ओकर सड़ि जेए

'मनु' भक्त जतए जन्मलिए

ओ वंश सगरो तरि जेए

(मात्रा क्रम : २२१२-२२२२)

****

45

जँ नाराज छी मानि जाऊ

पिया प्रेम बिधि जानि जाऊ

महिस भेल पारी तरे अछि

घरक खीरसा छानि जाऊ

मरल माछ पौरल दही अछि

हिया हमर सभ गानि जाऊ

करीया बड़द मुइल परसू

किछो नै कनी कानि जाऊ

छिटल रोपनी सम्हरत नै

घरो घुरि अहाँ ठानि जाऊ

(बहरे मुतकारिब, मात्रा क्रम : १२२-१२२-१२२)

****

46

हकन नोर माए कनै छै

तकर पुत्र मुखिया बनै छै

कते आब बैमान बढ़लै

गरीबक टकाकेँ गनै छै

पतित बनल नेता तँ देशक

दुनू हाथ ओ मल सनै छै

पएलक कियो जतय मौका

अपन बनि कऽ ओहे टनै छै

बनल भोकना जेठरैअति

मुदा 'मनु' तँ सभटा जनै छै

(बहरे मुतकारिब, मात्रा क्रम : १२२-१२२-१२२)

****

47

रहब आब नै दास बनि हम

अपन नीक इतिहास जनि हम

जखन ठानबै हम अपनपर

महासागरो देब सनि हम

उठा मांथ जतएसँ तकलहुँ

दएलहुँ तँ नक्षत्र गनि हम

बिपति केर माहूर पीने

चलै छी अपन मोन तनि हम

जमल खून मारलक धधरा

लएलहुँ विजय विश्व ठनि हम

(बहरे मुतकारिब, मात्रा क्रम : १२२-१२२-१२२)

****

48

धाख सभटा बिसरि गेलै

घोघ हुनकर उतरि गेलै

झूठ कोनाकँ नुकायत

जखन सोंझा बजरि गेलै

सय बचायब बचत कोना

लाज सभटा ससरि गेलै

ओ छलै फेसनसँ डूबल

काज सयटा पसरि गेलै

भेल नेता नीनमे सभ

देश सगरो रगरि गेलै

(बहरे रमल, मात्रा क्रम : २१२२-२१२२)

****

49

सुख भरल संसार चाही

दुखक नै अंबार चाही

मोन सदिखन खूब हरखे

बमक नै टंकार चाही

भरल घर मिथलाक ज्ञानसँ

अन्नकँ भंडार चाही

डोलि अम्बर फूल बरखे

भक्तकँ झंकार चाही

सभ कियो 'मनु' हँसि कऽ भेटे

एहने संसार चाही

(बहरे रमल, मात्रा क्रम : २१२२-२१२२)

****

50

रंग देखू भरल अछि सभतरि तँ खूनसँ

देश गेलै गैल बैमानीक घूनसँ

साग तरकारी कते भेलै महग छै

आब छी पोसैत नेना भात नूनसँ

नामकेँ लत्ता गरीबक देहपर अछि

लदल कबिलाहा कते छै गरम ऊनसँ

छैक भिसकी रम बहै भरपूर सभतरि

एखनो हम गुजर केलौं पान चूनसँ

मारि गरमी देखु 'मनु' बेबस कनै छी

ओ तँ अछि पेरीसमे पोसाति जूनसँ

(बह्रे रमल, मात्रा क्रम : २१२२-२१२२-२१२२)

****

51

तेल बिनु जेना निशठ टेमी धएने

बिनु पिया जीवन बितत कोना अएने

बरख बरखसँ हम तुसारी पूजने छी

बुझब की सुख साँझ पाबनि बिनु कएने

छै धिया सुख की बुझब कोना धिया बिनु

भ्रूण हत्यारा बुझत की बिनु पएने

मोल जीवनमे हमर बाबूक की अछि

मोन बुझलक छन्नमे हुनका गएने

रंग बदलति देखलौं सभकैँ हँसीमे

देखि 'मनु' दुनियाँक रहलौं मुँह बएने

(बहरे रमल, मात्रा क्रम : २१२२-२१२२-२१२२)

****

52

जखन खगता सभसँ बेसी तखन ओ मुँह मोड़ि लेलनि

जानि आफत छोरि हमरा सुखसँ नाता जोड़ि लेलनि

देखि चकमक रंग सभतरि ओहिमे बहि ओ तँ गेली

जानि खखड़ी ओ हमर हँसिते करेजा कोड़ि लेलनि

बन्द केने हम मनोरथ अप्पन सदिखन चूप रहलौं

पाञ्च बरखे आबि देख फेर सपना तोड़ि लेलनि

दुखसँ अप्पन अधिक दोसरकैँ सुखक चिन्ता कएने

आँखि जे फूटै दुनू तैँ एक अप्पन फोड़ि लेलनि

चलक सप्पत संग लेलौं जीवनक जतराक पथपर

मेघ दुखकैँ देखते ओ संग ‘मनु’कैँ छोड़ि लेलनि

(बहरे रमल, मात्राक्रम : २१२२ चारि-चारि बेर सभ पांतिमे)

****

53

जड़ि फसादक बड़्ड़ हमहूँ रोपने छी

छी अहाँ खुश तँ अपन मुँह फेरने छी

दोस्तकेँ दोस्ते ठकैए आइ सगरो
पीठमे भौँकैत छूरा देखने छी

भाइ माँ बाबूक आँखिक नोर बिसरि
सोन चानी की करब जे अरजने छी

संग खूनक जे खलेलक सगर होली
एहनोकेँ नै किए हम बारने छी

छै चुनावक हाल एहन देश भरिमे
'मनु' अखाड़ा राजनीतिक पकड़ने छी

(बहरे रमल मात्रा क्रम : २१२२-२१२२-२१२२)

****

54

वेदरदिया नै दरदिया जानै हमर

टाकासँ जुल्मी प्रेमकँ गानै हमर

सदिखन जरैए मन विरहकँ आगिमे

तैयो पिया नै किछु दरद मानै हमर

साउन बितल घुरियो कऽ नै एला पिया

नहि खीच हुनका प्रेम लऽग आनै हमर

बरखा खुबे बरिसय तँ गरजय बदरबा

छतिया दगध भेलै हिया कानै हमर

बसला पिया 'मनु' दूर बड़ परदेशमे

झरकल हिया कनिको तँ नै मानै हमर

(बहरे रजज, मात्रा क्रम : २२१२ तीन-तीन बेर सभ पाँतिमे)

****

जीवन कखन तक छैक नै बुझलक कियो

कखनो करेजक गप्प   नै जनलक कियो

भेटल तँ जीवनमे सुखक संगी बहुत

देखैत दुखमे आँखि नै तकलक कियो

दुखकेँ अपन बेसी बुझै किछु लोक सभ

भेलै जँ दोसरकेँ तँ नै सुनलक कियो

सदिखन रहल भागैत सभ काजे अपन

नै नोर आनक घुरि कए बिछलक कियो

जीवन तँ अछि जीवैत 'मनु' सभ एतए

मरियो कऽ जे जीवैत नै बनलक कियो

(बहरे रजज, मात्रा क्रम : २२१२ तीन-तीन बेर सभ पाँतिमे)

****

56

घोड़ा जखन कोनो भऽ नाँगड़ जाइ छै

कहि ओकरा मालिक झटसँ दै बाइ छै

माए बनल फसरी तँ बाबू बोझ छथि
नव लोक सभकेँ लेल सभटा पाइ छै

घर सेबने बैसल मरदबा छै किए
चिन्हैत सभ कनियाँक नामसँ आइ छै

कानूनकेँ रखने बुझू ताकपर जे
बाजार भरिमे ओ कहाइत भाइ छै

खाए कए मौसी हजारो मूषरी
बनि बैसलै कोना कऽ बड़की दाइ छै

पोसाकमे नेताक जिनगी भरि रहल
जीतैत मातर देशकेँ 'मनु' खाइ छै

(बहरे रजज, मात्रा क्रम : २२१२ तीन-तीन बेर सभ पाँतिमे)

****

57

हमर मिथिलाक माटिसँ सोन उपजैए

कऽलसँ बनि पानि अमृत धार निकलैए

सगर पोखरिक छह छह पानिमे गामक

रुपैया बनि मखाने माछ गमकैए

घरे घर सभ छटैए बड्ड बुधियारी

दलानसँ राजनीतिक जैड़ जनमैए

युवाकेँ हाथ बल छै ओ बढ़त आँगा

जँ लेलै ठानि छनमे चान पकरैए

अपन माटिसँ भएलहुँ दूर 'मनु' कोना

विरहमे हमर आँखिसँ नोर झहरैए

(बहरे हजज, मात्रा क्रम : १२२२-१२२२-१२२२)

****

58

लुटेए गाम गाबेए कियो लगनी

किए लागल इना सभकेँ शहर भगनी

कियो नै सोचलक परदेश ओगरलक

भऽ गेलै गामपर माए किए जगनी

उठेलौं बोझ हम आनेक भरि जिनगी

अपन घरमे रहल सदिखन बसल खगनी

बिसरलौं सुधि सगर कोना कऽ हम हुनकर

बनेलौं अपन जिनका हम घरक दगनी

अपन जननी जनमकेँ भूमि नहि बिसरल

भरल बाँकी तँ अछि सभठाम 'मनु' ठगनी

(बहरे हजज, मात्रा क्रम : १२२२ तीन तीन बेर सभ पांतिमे)

****

59

देख मुँह मूँगबा बहुतो बटाइत छै

नाम ककरो गरीबक नै सुहाइत छै

अन्न जे भेट जेए भुखलकैं साँझे

एहि लोभक तरे दिन भरि खटाइत छै

मीठ भाषण बरख पाँचे कते दै छै

जीतकैं बाद नेतासभ नुकाइत छै

घूस खा खा कऽ बनलै भोकना पारा

आन दमड़ीसँ चमड़ी बड़ चबाइत छै

भ्रष्ट नेता   घुमै बीएमडब्लूमे

एखनो 'मनु' गरीबक हक दबाइत छै

(बहरे मुशाकिल, मात्रा क्रम : २१२२-१२२२-१२२२)

****

60

खाल रंगेल गीदड़ बड्ड फरि गेलै

एहने आइ सभतरि ढंग परि गेलै

घुरि कऽ इसकूल जे नै गेल जिनगीमे

नांघिते तीनबटिया सगर तरि गेलै

देखलक भरल पूरल घर जँ कनखी भरि

आँखि फटलै दुनू डाहेसँ मरि गेलै

सभ अपन अपनमे बहटरल कोना अछि

मनुखकैँ मनुख बास्ते मोन जरि   गेलै

बीछतै 'मनु' करेजाकैँ दरद कोना

जहरकैँ घूंट सगरो पी कऽ भरि गेलै

(बहरे मुशाकिल, मात्रा क्रम : २१२२-१२२२-१२२२)

****

61

घोड़ कलियुग घड़ी केहन आबि गेलै

एकटा कंस घर घरमे पाबि गेलै

बनल अछि रक्षकेँ भक्षक आब सगरो

बिबश जनताक हक सभटा दाबि गेलै

अन्न खा थाह पेटक किछु नै पएलक

मालकेँ सगर भूस्सा चुप चाबि गेलै

शहर नै गाम आ घर-घर आब देखू

गीत पूवक हबामे सभ गाबि गेलै

डूबि नव फेशनक संगे आइ दुनियाँ

एक गजमे अरज देहक पाबि गेलै

(बहरे असम, मात्रा क्रम : २१२२-१२२२-२१२२)

****

62

हम जँ पीलहुँ शराबी कहलक जमाना

टीस नै दुख करेजक बुझलक जमाना

भटकलहुँ बड्ड भेटेए नेह मोनक

देख मुँह नै करेजक सुनलक जमाना

लिखल कोना कहब की की छल कपारक

बहुत रहियो कऽ सबटा छिनलक जमाना

दोख नै हमर नै ककरो आर कहियौ

देख हारैत हमरा हँसलक जमाना

दर्द जे भेटलै बूझब नै कनी 'मनु'

आन अनकर कखन दुख जनलक जमाना

(बह्रे असम, मात्रा क्रम : २१२२-१२२२-२१२२)

****

63

दड़ड़िते खेसारी बखाड़ी बनेलक

बीच तरहत्थीपर दही ओ जमेलक

बिसरि रौदी दाही   अपन कष्ट सभटा

कर्म पथपर खेतिहर चलि हऽर चलेलक

केखनो नहि पढ़ि रहल मड़राति सगरो

राजमंत्री बनि उम्र भरि ओ कमेलक

पहिर चश्मा दिन राति जे खूब पढ़लक

घूस दय चपरासी   किरानी कहेलक

देखिते जे इस्कूलकैँ   घुरि परेए

बनि कऽ 'मनु' शाइर गजल सभकेँ सुनेलक

(बहरे खफीक, मात्रा क्रम : २१२२-२२१२-२१२२)

****

64

भाइ भाइसँ बैरीन केलक रुपैया

गाम छोड़ा सभकेँ भगेलक रुपैया

आँखि मुँह मुनि परदेसमे जा कऽ बसलहुँ

सगर बुझितो   माहुर पियेलक रुपैया

आइड़े आइड़ खऽर बटोरैत माए

खेतमे बाबूकेँ कनेलक रुपैया

गोल चश्मा मुन्सी लगा ताकए की

खून चुसि चुसि सभटा दबेलक रुपैया

भाइ बाबूकेँ 'मनु' बिसरि जाउ छनमे

राज नै आब तँ घर चलेलक रुपैया

(बहरे खफीक, मात्रा क्रम : २१२२-२२१२-२१२२)

अंतिम शेरक दोसर पांतिमे दूटा हटल-हटल(आब तँ, २१-१=२२) लघुकेँ दीर्घ मानक छूट लेल गेल अछि।

****

65

अछि जँ जिनगी तँ प्रेम केनाइ सिख लिअ

दुख बिसरि जगमे मन लगेनाइ सिख लिअ

काल्हिकेँ नै कोनो भरोसा बचल अछि

आइ सबकेँ अप्पन बनेनाइ सिख लिअ

जीवनक सुख दुख बाट दू छैक बुझलौं

दूबटीयापर हँसि कऽ गेनाइ सिख लिअ

अपन मनमे प्रेमक जगाबैत बाती

आँखि सभकेँ सोझाँ उठेनाइ सिख लिअ

के बुझेलक ‘मनु’ छै अछूतगर पापी

पाप आबो संगे मिटेनाइ सिख लिअ

(बहरे खफीक, मात्रा क्रम : २१२२-२२१२-२१२२)

****

66

कखनो कियो हमरो प्रेम करबे करत

गेलहुँ जँ नै घर ओ बाट तकबे करत

भागैत अछि टोलक लोक नामसँ हमर

एकदिन सभ हमरो संग चलबे करत

बैसल घरे घर सभ कान मुनने अपन

दोसर मुँहसँ हमरो लेल सुनबे करत

के एतए अमृत पी कए आएल

सभ एक नै दोसर दिन मरबे करत

जे प्रेम केलक कहियो जँ कनिको ‘मनु’सँ

दू नोर मुइलापर ओ तँ कनबे करत

(बहरे सलीम, मात्रा क्रम : २२१२-२२२१-२२२१)

****

67

कोना अहाँकेँ घुरि कहब आबै लेल

बड़ दूर गेलौं टाका कमाबै लेल

नै रीत कनिको प्रीतक बुझल पहिनेसँ

टूटल करेजा अछि किछु सुनाबै लेल

लागल कपारक ठोकर जखन देखलहुँ

नै आँखिमे नोरक बुन नुकाबै लेल

बुझलौं अहाँ बैसल मोनमे छी हमर

ई दूर गेलौं हमरा कनाबै लेल

कोना कऽ ‘मनु’ कहतै आब अप्पन दोख

घुरि आउ फेरसँ दुनियाँ बसाबै लेल

(बहरे- सलीम, मात्रा क्रम : २२१२-२२२१-२२२१)

****

68

आइ सगरो गाममे हाहाकार छै

मचल एना ई किए अत्याचार छै

आँखि मुनने बोगला बैसल भगत बनि

खून पीबै लेल कोना तैयार छै

देखतै के केकरा आजुक समयमे

देशकँ सिस्टम तँ अपने बेमार छै

देखते मुँह पाइकँ कोना मुँह मोरलक

मांगि नै लेए खगल सभ बेकार छै

भरल भिरमे एखनो धरि एसगर छी

केकरो मनपर 'मनु'क नै अधिकार छै

(बहरे जदीद, मात्रा क्रम : २१२२-२१२२-२२१२)

****

69

हमर जीवन भरि करेजा टुटिते रहल

सभ कियो हमरासँ दूरे हटिते रहल

जेकरा हम अपन तन मन सभ सोपलौं

मोनकँ ओ हमर सदिखन लुटिते रहल

हमर भागक कनिक लिखलाहा देखियौ

किछु जँ लिखलौं छन्नमे सभ मिटिते रहल

पीठ पाछू सभ कियो रेतै कंठ छै

एक दोसर केर नाता छुटिते रहल

हम सिनेहक कलश ‘मनु’ कतबो जोड़लौं

काँच बासन सन भहरि सभ फुटिते रहल

(बहरे जदीद, मात्रा क्रम : २१२२-२१२२-२२१२)

****

70

एखनो कोना कऽ छी नै जनेलौं हम

छोरि मनकेँ आन नै धन कमेलौं हम

सभक आनै लेल मुँहपर हँसी चललौं

अपनकेँ नै जानि कतए हरेलौं हम

हृदय खोखरलक हमर जे दुनू हाथसँ

ओकरो हँसि-हँसि कऽ अप्पन बनेलौं हम

फूल सगरो छोरि काँटे किए बिछलौं

ई करेजा जानि कोना लगेलौं हम

हमर तोरलकै जखन सब करेजा ‘मनु’

मगन भय कहि गजल ताड़ी चढ़ेलौं हम

(बहरे कलीब, मात्रा क्रम : २१२२-२१२२-१२२२)

****

71

हम गजल कोना कहू भीड़मे रसगर

सगर मुँह बेने मनुख भेसमे अजगर

पाइ घोटाला हबालाक खाएकेँ

रोग छै सबकेँ पकरने किए कसगर

बहिन माए भाइ बाबू अपन कनियाँ

सब तकै सम्बन्धमे दाम ली जथगर

गामकैँ बेटा परेलै शहर सबटा
खेत एकोटा रहल आब नै चसगर

छै बिकाइ प्रेम दू-दू टका मोले
रीत 'मनु'कैँ नै लगै छै कनी जसगर

(बहरे कलीब, मात्रा क्रम : २१२२-२१२२-१२२२)

****

72

आब चाही बस अहाँ केर मुस्कीटा
नै मरब पीने बिनु प्रेम चुस्कीटा

जे अहाँ बजलौं करू ओकरो पूरा
की अहूँ भेलौं खली बम्म फुस्कीटा

नै कटाबू नाक आबू सभक सोंझाँ

की तरे-तर रहब मारैत भुस्कीटा

डर लगैए भीड़मे नै निकलु बाहर

देख टीभी बसि घरे करब टुस्कीटा

‘मनु’ दखेलौं सभक अपनो कनी देखू

बिसरि अप्पन काज नै बनब घुस्कीटा

(बहरे कलीब, मात्रा क्रम : २१२२-२१२२-१२२२)

****

73

डूबने बिनु बुझब कोना निशा की छै

प्रेम बिनु केने कि जानब सजा की छै

बसि कऽ धारक कात हेलब सिखब कोना

आउ देखी कूदि एकर मजा की छै

नोकरी कय नै कियो धन कमेलक बड़

अपन मालिक बनु तँ एहिसँ भला की छै

आइ अप्पन बलसँ पीएम बनतै ओ

हारि झूठे ढोल पीटब हबा की छै

रोडपर कोनो करेजक परल टुकड़ा

ओहि छनमे ‘मनु’सँ पुछबै दया की छै

(बहरे कलीब, मात्रा क्रम : २१२२-२१२२-१२२२)

****

74

लदने नै अनेरे लाश छी कान्हपर

जीवन केर सबटा आश छी कान्हपर

दिन भरि जे कमेलौं ओकरे दाम अछि

ढाकीमे बुझू नै घास छी कान्हपर

खूजल उक जकाँ कोना फरफराइ छी

नै रखने मनुक्खक भाष छी कान्हपर

भैया भेल नेता आब नै हम डरब

रखने हाथ सदिखन खास छी कान्हपर

कुक्कुर पोसि नव-नव साहबी केर ‘मनु’

दू कट्ठा बचेने चास छी कान्हपर

(बहरे कबीर, मात्रा क्रम : २२२१-२२२१-२२१२)

****

75

होए मोन हरखीत ढोलो सोहाइ

नै बिनु कारने मीठ बोलो सोहाइ

प्रियगर भेट नवकी कनियाँ गेलै जँ

हाथक हुनकर नोनगर ओलो सोहाइ

जेबीमे जखन भरल रुपैया होइ

तहने महग सस्ताक मोलो सोहाइ

सिम्बर तूरकेँ नीक गदगर मसलंग

सुन्नर ओहिपर आब खोलो सोहाइ

भेटै सोन 'मनु' जाहिमे भरि सन्दूक

एहन घरक महकैत झोलो सोहाइ

(बहरे हमीद, मात्रा क्रम : २२२१-२२१२-२२२१)

****

76

सौंसे सिरा हाटपर खा तीमन घरक तीत लगलै

सुलबाइ बाबूक गप्पसँ ससुरक वचन हीत लगलै

अप्पन घरक खेत आँगनमे खटब बुड़िबक सनककैँ

परदेशमे नाक अप्पन रगड़ैत नव रीत लगलै

आदर्श काजक चलब गामे-गाम झंडा लऽ आगू

माँगेत घर भरि तिलक बेटा बेरमे जीत लगलै

प्रेम तँ बदलै सभक बुझि धन बल अमीरी गरीबी

निर्धन अछूते रहल धनिकाहा कते मीत लगलै

माए बहिन केर बोलसँ सभकैँ लगै कानमे झ’र

सरहोजि साइरक गप ‘मनु’कैँ मधुरगर गीत लगलै

(बहरे मुजस्सम वा मुजास, मात्रा क्रम : २२१२-२१२२/२२१२-२१२२)

****

77

(हजल : हजल मने हास्य गजल)

लाल धोती केश राँगि समधि चुगला बनला ना

बेटा बेचि आनि बरयाती ई पगला बनला ना

सभ बिसरि आँखि मुनि ध्यानसँ ताकथि रुपैया

भीतर कारी बाहर उज्जर बोगला बनला ना

खेत खड़ीहान बेच बेच पीबथि बभना तारी

आब लंगोटा खोलि खालि ई तँ हगला बनला ना

तमाकुल चूनबैत पसारने दिनभरि तास

घर आँगनक चिंता नहि ई खगला बनला ना

जेल छोरि बाहर आबि हाथ जोरि माँगथि भोट

जितैत देरी 'मनु'कैँ बिसरि दोगला बनला ना

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१८)

****

78

गदहराज धन्य छी दिअ सदबुद्धि हमरो अहाँ

उपर लदने बोझ नै आँखि देखाबी ककरो अहाँ

धियान मग्न रहि मधुर तान ढेंचू-ढेंचू करै छी

मन्त्र जनैत छी शास्त्रीय गायन कए सगरो अहाँ

मनुक्ख पबैत सम्मान विशेष नाम अहीँक लऽ कऽ

बिन आपति बर्दास्त करी नहि करी झगरो अहाँ

स्वर्ग गेलौं लागले छान ई कथा जगजाहिर अछि

करु पैरबी कनी हमर बियाहक जोगरो अहाँ

गृहस्थक जुआ कान पर 'मनु' खटब आब कोना

दिअ गदहपन जँ बुझलौं अपन हमरो अहाँ

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१९)

****

79

हेरौ कोआ खसा दे एगो आम हमरो लेल

देबौ बाली माए जे देतै दाम हमरो लेल

चल-चल गे बूचनी चलै आब खेलएब

भऽ गेल देलकै जे माए काम हमरो लेल

नहि छमकै एना लए कऽ अपन पुतूल

तोरासँ सुन्नर देथीन राम हमरो लेल

बहुत केलहुँ काज   लगेलहुँ बड़ राज

आबो तँ घुरि आउ बाबू गाम हमरो लेल

सभकँ नाम गे माए कते सुन्नर-सुन्नर

किएक नहि 'मनु' सन नाम हमरो लेल

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१६)

****

लाल-दाईकैँ ललना लाले लाल लगैत छथि
लाली अपन माएकैँ चोरा कऽ नुकाबैत छथि

हिनकर आँखिमे काजरक बिजुड़ीया लोके
मएयोसँ सुन्नर झिलमिल झलकैत छथि

लटकल माथपर   सुन्नर लट हिनकर
देखियौंह् चंद्रमाकैँ आब ई लजाबैत छथि

सुनि-सुनि बहिना सभ हिनकर किलकाड़ी
कियो खेलाबैत कियो हिनका झुलाबैत छथि

रंग-रूप चालि-चलन सभटा निहाल छनि
मुस्कीसँ ई तँ अपन 'मनु'कैँ लुभाबैत छथि

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१७)

****

81

बिनु पानिक नाउ चलाएब हम

बिनु चक्काक गाड़ी बनाएब हम

हमर मोनमे तँ जँ किछु आएत

बिन सोचने सभ सुनाएब हम

अपन ब्याहमे हम नहि जाएब

सराध दिन बजा बजाएब हम

कनियाँकेँ लय ओकर नैहरसँ

सासुरसँ खूब कतियाएब हम

'मनु' मन चंचल टोनए सभकेँ

केकरो हाथ नै घुरि आएब हम

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१३)

****

82

हे माए नहि चरबै लए गाए जेबौ हम

जेबौ आब इसकूल कोपी पेन लेबौ हम

अपन भाग हम आब अपनेसँ लिखबौ

कुकूर जकाँ नै माँड़े तिरपीत हेबौ हम

रोगहा-रोगहा सभ कियो कहए हमरा

एक दिन बनि डाक्टर रोग हरेबौ हम

टूटल फूटल अपन फुसक घर तोरि

सुन्नर सभसँ पैघ महल बनेबौ हम

हमरा कहैत अछि 'मनु' मुर्ख चरबाहा

पढ़ि कए सभ चरबाहाकेँ पढ़ेबौ हम

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण- १६)

****

83

माएगै हमर फुकना की भेल

दाइ हमर झुनझूना की भेल

बाबाकेँ कहबनि सभ हरेलौं

सभटा हमर खेलौना की भेल

दूध-भात आब हम नहि खेबौ

पेटमुका हमर सन्ना की भेल

हम जे बुललौं बाबा बाबी संगे

रातिक हमर सपना की भेल

'मनु' मामा परसु जे अनलन्हि

हमर निकहा चुसना की भेल

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१२)

****

84

चम चम चम चम तारा चमकए

बौआ कए हाथक तरुआ गमकए

करीया बकरी नव उज्जर महीस

लाल बाछी किए दौर-दौर बमकए

बौआक घोरा सय-सय टाकाकँ देखू

काकाकँ घोरा पिद्दी कतेक कमकए

बाबीकँ सारी माएकँ लहंगा बहए

बौआकँ घघरी तँ कतेक छमकए

बौआ हमर आब गुमशुम किएक

'मनु' संग ठुमुक-ठुमुक ठुमकए

(सरल वार्णिक, वर्ण-१४)

****

85

बेलगोबना नहि सुनलक गप्प

ओकर माथसँ बेल खसल धप्प

बरखा बुनि लऽ कऽ एलै कारी मेघ

पएर तर पानि करे छप्प छप्प

बोगला भेल देखू कतेक चलाक

एके पएरे करे दिन भरि जप्प

बुढ़िया नानीकेँ दुनू काने हरेलै

चाह पीबे भरि दिनमे दस कप्प

बैस 'मनु' झोँटा छटा ले चुपचाप

नै तँ काटि देतौ कान हजमा खप्प

(सरल वार्णिक बह्र, वर्ण-१३)

****

86

सपना हमर हम वीर बनी

करतब करी आ धीर बनी

जे देशकैं अपमान करै

ओकर करेजक तीर बनी

सबहक सिनेहक मीत रही

ककरो मनक नै पीर बनी

आबी समाजक काज सदति

धरतीक नै हम भीर बनी

किछु काज ‘मनु’ एहन तँ करी

मरियो कऽ आँखिक नीर बनी

(मत्रा क्रम : २२१२-२२१-१२)

****

87

नेना हम   मएँकेँ आँखि जूराएब

मिथिलाकेँ अपन सोनासँ चमकाएब

छथि देखू घरे-घर बसल सीता राम

एहन आँन कतए मेल देखाएब

गंगा छथि बसल मिथिलाक पावन भूमि

डूम्मी मारि कमला घाट नाहाएब

मुठ्ठी भरि बिया भागक अपन हम रोपि

अपने माटिमे हँसि हँसि कऽ गौड़ाएब

'मनु' दे सपत घर घुरि आउ काका बाउ

नेन्नाकेँ कखन तक कौँढ़ ठोड़ाएब

(बहरे रजज, मात्रा क्रम : २२२१-२२२१-२२२१)

****

88

चलै चुनमुन चलै गुनगुन तमासा घुमि कए आबी

जिलेबी ओतए छानैत तोहर भेटतौ बाबी

पढ़ैकँ छुटल झंझट भेल इसकूलक शुरू छुट्टी

दसो दिन राति मेला घुमि कए नव वस्तु सभ पाबी

करीया बनरिया कुदि कुदि कए ढोलक बजाबै छै

चलै चल ओकरा संगे   सगर नेना कनी गाबी

बनल मेनजन अछि बकरी पबति बैसल अचारे छै

बरद सन बौक दिनभरि चूप्प रहए पहिरने जाबी

बुझलकौ आब तोरो होसयारी 'मनु' तँ बुढ़िया गै

लगोने ध्यान वक कतएसँ सम्पति नीकगर दाबी

(बह्रे हजज, मात्रा क्रम : १२२२ चारि-चारि बेर सभ पाँतिमे)

****

89

तिला संक्रातिकेँ खिच्चैर खाले रौ हमर बौआ

लऽ जेतौ नै तँ कनिए कालमे ओ आबिते कौआ

चलै बुच्ची सखी सभ लाइ मुरही किन कए आनी

अपन माएसँ झटपट माँगि नेने आबि जो ढौआ

बलानक घाट मेलामे कते घुमि घुमि मजा केलक

किए घर आबिते मातर बुढ़ीया गेल भय थौआ

कियो खुश भेल गुर तिल पाबि मुरही खुब कियो फाँकैँ

ललन बाबा किए झूमैत एना पी कए पौआ

सगर कमलाक धारक बाटमे बड़ रमणगर मेला

किए सभ एतए एलै कि भेलै ‘मनु’ कुनो हौआ

(बह्रे हजज, मात्रा क्रम : १२२२-१२२२-१२२२-१२२२)

****

90

फेर एलै दिवाली लेबै फटक्का

फोरबै मिल कए सभ मारत ठहक्का

बड़ रमनगर बुसऽट नव अनलन्हि मामा

देखते सभ भऽ गेलै कोना कऽ बक्का

घीक लड्डू दुनू हाथे दैत भरि भरि

अपन बेटाक कोजगरामे तँ कक्का

दौड़ चलबैत सासुरकैं फटफटिया

हरसँ भरि थालमे सौंसे फसल चक्का

आइ कुसियारक ट्रककेँ परल पाँछा

'मनु'क गामक सगर नव छौंड़ा उचक्का

(बहरे असम, मात्रा क्रम : २१२२-१२२२-२१२२)

****

91

अहाँ तँ सभटा बुझैत छी हे माता

सुमरि अहाँकेँ कनैत छी हे माता

दीन हीन हम नेना बड़ अज्ञानी

आँखि किए अहाँ मुनैत छी हे माता

अहाँ तँ जगत जननी छी भवानी

तैयो नहि किछु सुनैत छी हे माता

श्रधाभाव किछु देलौं अहीँ हमरा

अर्पित ओकरे करैत छी हे माता

नहि हम जानी किछु पूजा-अर्चना

जप तप नहि जनैत छी हे माता

जगमे आबि   ओझरेलहुँ एहेन

अहाँकेँ नहि सुमरैत छी हे माता

छी मैया हमर हम पुत्र अहीँकेँ

एतबे तँ हम बजैत छी हे माता

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१३)

****

92

धूप आरती हम अनलहुँ नहि

जप-तप करब सिखलहुँ नहि

सदिखन कर्तव्यक बोझ उठोने

अहाँक ध्यान किछु धरलहुँ नहि

की होइत अछि माए पुत्रक नाता

एखन तक हम बुझलहुँ नहि

हम बिसरलहुँ अहाँकेँ जननी

अहुँ एखन तक सुनलहुँ नहि

अपन शरणमे लऽ लिअ हे माता
ममता अहाँक तँ जनलहुँ नहि

(सरल वार्णिक बह्र, वर्ण-१३)

****

93

निर्धन जानि कऽ छोरि गेलहुँ माँ
कोन अपराध हम केलहुँ माँ

केहनो छी तँ हम पुत्र अहींकँ
सभ सनेश अहींसँ पेलहुँ माँ

दामक तराजुमे नै एना जोखू
ममताकँ पियासल भेलहुँ माँ

दर-दर भटकि खाक छनै छी
दर्शन अपन नै दखेलहुँ माँ

'मनु'कैं अपन सिनेह नै देलहुँ

सोंझाँसँ दूर आब भगेलहुँ माँ

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१२)

****

94

दर्शन दए हमरो तरू माँ

आशा हमर पूरा करू माँ

हम छी तुअर बेटा अहीँकैं

छनमे भवानी दुख हरू माँ

नै पाठ पूजा विधि जनै छी

कोना चरण तोहर परू माँ

अछि चित्त चंचल मोन भटकल

जीवनक आशा की धरू माँ

नै खोलबै मैया नजरि पट

के ई हरत 'मनु'कैँ गरू माँ

(मात्रा क्रम : २२१२-२२१२-२)

****

95

हे राम बसु मनमे हमर

ई प्राण धरि तनमे हमर

सदिखन अहीँक ध्यानमे

नै मन बसै धनमे हमर

प्रभु दरसकैँ आशासँ ई

भटकैट मन बनमे हमर

एतेक मन चंचल किए

प्रभु रहथि कण कणमे हमर

हे राम 'मनु'पर करु दया

नै मन बहै छनमे हमर

(बहरे रजज, मात्रा क्रम : २२१२-२२१२)

****

96

चलि अहाँ कतए किए गेलहुँ मुरारी

एहि दुखियाकेँ हरत के कष्ट भारी

तान ओ मुरलीक फेरसँ आबि टारू

बिकल भेलहुँ एतए एसगर नारी

द्रोपतीकेँ लाज बचबै लेल एलहुँ

नित्य सय सय बहिनकेँ कोना बिसारी

बनि कऽ फेरसँ सारथी भारत बचाबू

सभक रक्षक हे मधुसुदन चक्रधारी

वचन जे रक्षाक देलहुँ ओ तँ राखू

कहत कोना 'मनु' अहाँकैं हे बिहारी

(बहरे रमल, मात्रा क्रम : २१२२-२१२२-२१२२)

****

97

हे भोला लिअ अपन शरणमे

नहि किछु भांगट हमर मरणमे

सबतरि घुरि हम आश हारलौं

नहि छी समरथ अपन भरणमे

सगरो मोनक मीत दूर अछि

किछु नहि भेटल पुण्य हरणमे

जीवन भरि हम मुर्ख बनल छी

भेटल सुख भोलाक वरणमे

पापक बोझसँ थाकि गेल छी

'मनु'कैँ लय लिअ अपन चरणमे

(मात्रा क्रम : २२२२-२१-२१२)

****

98

शिव केर महिमा के नै जनैत अछि

सबहक मनोरथ पूरा करैत अछि

दिन राति भोला पीबैत भांग छथि

हुनकर चरणकैँ के नै गहैत अछि

पति ओ उमाकैँ सबहक पतित हरन

भोला हमर सबकैँ दुख हरैत अछि

बसहा सवारी बघछाल अंगपर

शमशानमे रहि दुनियाँ हँकैत अछि

नै मूँगबा खाजा चाहिएनि जल

'मनु' आक धथुरसँ हिनका पबैत अछि

(मात्रा क्रम : २२१२-२२२१-२१२)

****

99

माँ शारदे वरदान दिअ

हमरो हृदयमे ज्ञान दिअ

हरि ली सभक अन्हार हम

एहन इजोतक दान दिअ

सुनि दोख हम कखनो अपन

दुख नै हुए ओ कान दिअ

गाबी अहीँकेँ गुण सगर

सुर कन्ठ एहन तान दिअ

बुझि पुत्र 'मनु'केँ माँ अपन

कनिको हृदयमे स्थान दिअ

(बहरे रजज, मात्रा क्रम : २२१२-२२१२)

****

100

कनी हमरो बजा दिअ माँ

अपन दर्शन करा दिअ माँ

कते आशा लगोने छी

अपन चाकर बना दिअ माँ

जनम भरि बनि टुगर रहलौं

सिनेहक निर चटा दिअ माँ

जँ हम नेना अहाँकेँ छी

अलख मनमे जगा दिअ माँ

सुखेलै नोर जरि आँखिक

चरण ‘मनु’केँ दखा दिअ माँ

(बहरे हजज, मात्रा क्रम : १२२२-१२२२)

****

101

नै अहाँ केर बिसरी नाम हे भगवन

होइ कखनो अहाँ नै बाम हे भगवन

सुख कि भेटे दुखे जीवनक रस्तापर

संगमे रहथि सदिखन राम हे भगवन

हम बनेलौं सिया मंदिर अपन मनकेँ

आब कतए अहाँकेँ ठाम हे भगवन

आन नै आश कोनो बचल जीवनकेँ

अपन दर्शनकटा दिअ दाम हे भगवन

'मनु' अहाँकेँ करैए जोड़ि कल विनती

तोड़ि फेरसँ तँ अबियौ खाम हे भगवन

(बहरे मुशाकिल, मात्रा कर्म : २१२२-१२२२-१२२२)

****

ஐ●━━━━━━━━━━━ஐ۩۞۩ஐ━━━━━━━━━━━●ஐ

गजल नहि लिखतौं तँ हम करितौं की

गजल बिनु जिनगी अपन जीबितौं की

ஐ●▬▬▬▬▬▬▬▬▬▬▬ஐ۩۞۩ஐ▬▬▬▬▬▬▬▬▬▬●ஐ